सिज़ेरियन बच्चों को दमा का खतरा

पिछले कई वर्षों में किए गए दमा सम्बंधी अध्ययनों के तुलनात्मक विश्लेषण से पता चला है कि सिज़ेरियन ऑपरेशन से पैदा हुए बच्चों में दमा की आशंका सामान्य से 20 प्रतिशत ज़्यादा होती है। उत्तरी आयरलैण्ड में बच्चों के एक अस्पताल में कार्यरत डॉ. सुरेन तवज्ञानम और माइक शील्ड्स ने ऐसे 20 अध्ययनों के विश्लेषण के बाद उपरोक्त निष्कर्ष पत्रिका *क्लिनिकल एण्ड एक्सपेरिमेंटल एलर्जी* में प्रकाशित किए हैं।

पिछले कुछ वर्षों में बच्चों में दमा का प्रकोप बहुत अधिक बढ़ा है। जैसे, इंग्लैण्ड में दमा का प्रकोप 1973 के मुकाबले आज चार गुना है। इसके कई कारण हो सकते हैं। मसलन एक कारण तो यही हो सकता है कि आजकल बेहतर रिपोर्टिंग होता है जिसकी वजह से ज़्यादा मरीज़ सामने आते हैं। स्तनपान की अवधि का भी असर पड़ सकता है या हो सकता है कि पर्यावरण प्रदूषण या दैनिक जीवन में उपयोग किए जाने वाले रसायनों का भी असर रहा हो।

यह तो काफी समय से रिपोर्ट किया जाता रहा है कि सिज़ेरियन ऑपरेशन से पैदा हुए बच्चों का संपर्क मां के प्रसव मार्ग और आंतों के बैक्टीरिया से नहीं हो पाता। इस कारण से उनका प्रतिरक्षा तंत्र इनके विरुद्ध प्रतिरक्षा विकसित नहीं कर पाता। दरअसल 'स्वच्छता परिकल्पना' में माना जाता है कि ऐसे रोगजनक एजेंट्स से संपर्क के अभाव में प्रतिरक्षा तंत्र हानिरहित पदार्थों के प्रति संवेदनशील हो जाता है। जैसे शरीर में परागकणों या धूल के प्रति अति-संवेदना पैदा हो जाती है जो एलर्जी व दमा के रूप में सामने आती है। लिहाज़ा अति-स्वच्छ प्रसव, जिसमें मां के सूक्ष्मजीवों से संपर्क तक न होने पाए, शिशु के लिए अच्छा नहीं होता।

इस विचार की जांच के लिए ही तवज्ञानम व उनके साथियों ने पूर्व में किए गए अध्ययनों का विश्लेषण करने की ठानी थी। ये 20 अध्ययन किसी एक निष्कर्ष पर नहीं पहुंचे थे। सबके निष्कर्ष अलग-अलग व कभी-कभी तो परस्पर विरोधी भी थे। मगर जब सबको मिलाकर देखा गया तो पता चला कि सिज़ेरियन ऑपरेशन से पैदा हुए बच्चों में दमा के प्रकोप की आशंका 20 प्रतिशत ज़्यादा होती है।

अन्य शोधकर्ताओं का मत है कि 20 प्रतिशत थोड़ी अतिशयोक्ति हो सकती है मगर इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि दमा में वृद्धि का एक कारण सिज़ेरियन प्रसव हो सकता है। अब शोधकर्ता उत्तरी आयरलैण्ड में एक विस्तृत अध्ययन करने पर विचार कर रहे हैं क्योंकि वहां की सरकार अनावश्यक या अनुपयुक्त सिज़ेरियन प्रसव पर रोक लगाने की कोशिश कर रही है। शोधकर्ताओं का विचार है कि इस कोशिश के असर ज़रूर नज़र आएंगे। कुछ शोधकर्ता तो सुझाव दे रहे हैं कि सिज़ेरियन प्रसव से पैदा हुए बच्चों का संपर्क कृत्रिम रूप से कतिपय ऐसे बैक्टीरिया से कराया जाना चाहिए जिनसे कुदरती तौर पर प्रसव के दौरान बच्चों का संपर्क होता है। ***(स्रोत फीचर्स)***